सार्थक बहस

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सार्थक बहस का अर्थ है सांगोपांग किसी भी विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना। सार्थक बहस में पक्ष और विपक्ष दोनों बिन्दूओं पर चिंतन किया जाता है। निरर्थक बहस में विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हुए व्यक्ति बैठकर एक–दूसरे पर छीटाकसी करते हैं। प्रायः टी.वी. चैनलों पर बहस को देखा जा सकता है। किसी भी विषय पर जब चिंतन किया जाता है तो पक्ष और विपक्ष के लोग सार्थक बहस करने की अपेक्षा मुद्दों से भटकाते हैं। जनता में गलतफहमी फैलाने का प्रयास करते हैं। इससे समाज में नकारात्मकता का विष फैलता है। यदि किसी स्थान पर एक संन्यासी बैठकर सदुपदेश करता है तो वहां के परमाणु भी सकारात्मक हो जाते हैं। जहां पर चोर–डाकू बैठकर चिंतन करते हैं तो वहां का परमाणु भी नकारात्मक हो जाता है। देश में कई प्रकार की विचारधाराओं वाले व्यक्ति रहते हैं। किसी भी विषय पर लोगों की भिन्न–भिन्न राय हो सकती है किन्तु गाली गलौच और आक्षेप की राजनीति करके बहस को निरर्थक बना दिया जाता है। बहस के अनेक मुद्दे हो सकते हैं उस पर गम्भीर चिंतन होना चाहिए। कुछ ऐसा निष्कर्ष निकलना चाहिए जिससे सबका कल्याण हो। बहस राष्ट्रहित में होनी चाहिए। ऐसी बहस नहीं करनी चाहिए कि किसी वर्ग विशेष की भावना आहत हो। बहस के अनेक मुद्दे हो सकते हैं–शिक्षा, चिकित्सा, रोजीरोटी, कृषि इत्यादि का विकास कैसे हो इन पर चिंतन होना चाहिए। बहस का सबसे प्रमुख स्थल हमारे देश में भारतीय संसद है। संसद में विभिन्न विषयों पर बहस हुआ करती है। गुण और दोष के आधार पर किसी विषय पर चिंतन किया जाता है। बहस के बाद कानून की प्रक्रिया चालू होती है। आजकल बहस का स्तर इतना गिर गयाी है कि स्वतंत्र रूप से किसी भी विषय पर विचार ही नहीं होता। सभी नेता अपने लाभ हानि के अनुसार बहस करते हैं। सार्थक बहस के लिए सर्वजन सुखाय और सर्वजन हिताय की भावना होनी चाहिए। बहस राग–द्वेष मुक्त होकर मानव के लिए की जानी चाहिए। बड़े एवं व्यापक हित के लिए क्षुद्र स्वार्थ का परित्याग करके बहस करनी चाहिए।

जिस व्यक्ति की नैतिकता की अवधारणा जितनी व्यापक होगी, सभ्यता के विकास क्रम में वह उतना ही आगे माना जाएगा। मानव को भूगोल या समाज विशेष की मर्यादाओं में कैद करना उसका अवमूल्यन करना है। किसी भी दल से सम्बद्ध होकर जब बहस की जाएगी तो वह सार्थक बहस नहीं कहलाएगी। उपाधि रहित मानव ही मानव है। संस्थाबद्ध, समुदायबद्ध या राष्ट्रबद्ध मानव मानव नहीं, मानव की विकृतियां उसकी अवस्था है। जातिगत या जातिग्रस्त व्यक्ति की नैतिकता जातिगत होगी, जो सम्प्रदाय में आबद्ध है उसकी नैतिकता सम्प्रदाय तक सीमित रहेगी। राष्ट्र भक्त लोगों के समक्ष राष्ट्र ही सब कुछ हो जाता है। राष्ट्र में बंटकर मानव ने नृशंसता सीखी है। धर्म और पंथ के नाम पर संघर्ष में मानव ने जितने रक्त बहाये हैं, एक–दूसरे पर जितना उत्पीड़न और अन्याय किया है, उससे प्रतीत होता है कि पंथ विशेष की नैतिकता भी मानव और मानवता को विभाजित करती रही हैं आज जब भी बहस होती है तो राजनेता अपने वर्ग विशेष के लोगों तक ही सीमित रहते हैं। उनका दृष्टिकोण समूचे राष्ट्र तक विकसित हो ही नहीं पाता। राष्ट्रीय साम्राज्यवाद की तरह पंथ और सम्प्रदायवाद के नाम पर भी विश्व विजय की कुत्सित आकांक्षा मानव के लिए अभिशाप बन रही है। धर्म मानव के लिए अवश्य बना था किन्तु वह मानव धर्म नहीं बन सका। मतवाद एवं पंथ, सम्प्रदाय की जकड़न और उसके परस्पर श्रेष्ठता के मिथ्या अभिमान धर्म परिवर्तन को धर्म विजय मानने का पागलपन आज वैश्विक नैतिकता में बाधक है।

विश्व धर्म या मानव धर्म के बिना हम विश्व मनुष्य बन ही नहीं सकते। बहस जब भी होती है तो वह पंथ सम्प्रदाय एवं धर्म तक ही सीमित रह जाती है। वास्तव में जब प्रत्येक पंथ सम्प्रदाय और धर्मसंघ अपने को सर्वश्रेष्ठ एवं एकमात्र मुक्तिदाता मानेगा तो दूसरों को हीन समझेगा ही फिर तो लाभ, लोभ, आतंक एवं भय तथा प्रचार तंत्र आदि से धर्म परिवर्तन करना अपना सर्वोच्च कर्तव्य मानेंगे। कभी–कभी रंगभेद और वर्णभेद पर भी बहस छिड़ जाती है। इस विषय पर भी लोग अनेक मत मतान्तर प्रस्तुत करते हैं। हम सभी कहते हैं कि ईश्वर जगत पिता है और हम सभी उसकी सन्तान हैं। मानव भातृत्व एक तार्किक परिणति है। आर्य–अनार्य, श्वेत–अश्वेत, उच्च और नीच वर्ग या जाति का भेदभाव क्यों ओर कैसा? सामाजिक कार्य विभाजन को समझा जा सकता है, किन्तु जन्मना जातिवाद तो ठीक नहीं। जन्म रंग एवं नस्ल

से भी कोई ऊॅच या नीच नहीं हो सकता। अश्वेतों के ऊपर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दासता थोपने का अधिकर एक विडम्बना है। हिटलर ने शुद्ध आर्य वर्चस्व के नाम पर लाखों यहूदियों का जिस अमानसिक ढंग से वध किया, उसे मानव इतिहास की शायद सबसे शर्मनाक घटना कहा जायेगा। भारत में भी वर्ण व्यवस्था के नाम पर शम्बूक के बध, एकलव्य के अंगूठा का कुत्सित दान तथा हिन्दू समाज के शूद्रों को अस्पृश्य मानने और अमानवीय घटनाएं आज भी विद्यमान हैं। भारत में नारी समाज के ऊपर भी बहुत दिनों से बहस छिड़ी हुई है।